

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

तारों से बातें

कविता व चित्र: कनक शशि अनिल

मैं लाख कोशिश करती हूँ
ये चुप ही बने रहते हैं
जाने ये तारे घण्टों तुमसे
क्या बातें किया करते हैं...



चकमक

इस बार ●●●●●●●●

| | |
|--|----|
| तारों से बातें कनक शशि अनिल | 2 |
| गोबुक गाँव में एक दिन पंकज साइकिया | 4 |
| अन्तर ढूँढो | 9 |
| चैन की साँस उमा सुधीर | 10 |
| मैं गुम नहीं होऊँगी अमित कुमार | 12 |
| तुम भी बनाओ रक्षिता सैनी | 14 |
| मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 19 आर एस रेशू राज, ए पी माधवन व साथी | 16 |
| चित्रपहेली | 18 |
| ताला सुधारनेवाला राजेश जोशी | 20 |
| ताला सुधारनेवाला: एक टिप्पणी नरेश सक्सेना | 23 |
| किताबें कुछ कहती हैं... | 24 |
| उल्लू नहीं, ये तो पतंगा है पीयूष सेकसरिया | 26 |
| क्यों-क्यों | 30 |
| माथापच्ची | 34 |
| मेरा पत्रा | 36 |
| तुम भी जानो | 43 |
| भूलभुलैया | 44 |



सम्पादक

विनता विश्वनाथन
कनक शशि अनिल

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन

कनक शशि अनिल

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण

झनक राम साहू

एक प्रति : ₹50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर: 10107770248

IFSC कोड: SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

गोबुक गाँव में एक दिन

पंकज साइकिया

अनुवाद: कनक शशि अनिल



देरी और दोयांग सुबह बहुत जल्दी उठ जाती हैं। आज उन्हें लकड़ियाँ इकट्ठा करने जंगल जाना है। माँ उनके दोपहर के खाने के लिए एककम के पत्तों में गरम चावल बाँध देती हैं।



देरी अपने गमबूट पहनकर टोकरी उठा लेती है। दोयांग एक डिब्बे में राख और नमक मिलाकर रख लेती है। यह जोंकों से बचने के लिए है, क्योंकि जंगल जोंकों से भरा हुआ है।

उनके दोस्त स्कूल के मैदान में उनसे मिलने आ जाते हैं। वे सब उनकी मदद करने आए हैं।



रास्ते में उन्हें
 एक गाँववाला
 दिखाई देता है।
 वो खेती के लिए
 अपनी ज़मीन
 साफ कर रहा
 है। वहाँ वो
 एक साल तक
 फसल उगाएगा।
 फिर उस ज़मीन
 को दोबारा
 जंगल बनने के
 लिए छोड़ देगा।



चलते-चलते देरी पके हुए कुछ शहतूत तोड़ लेती है। वो बहुत ताज़े और मीठे होते हैं। दोयांग शहतूत के पत्तों से एक कटोरा बना लेती है, ताकि वे कुछ शहतूत घर ले जा सकें।



फिर उन्हें चरता हुआ एक बड़ा-सा मिथुन मिलता है। वे चुपचाप उसके पास से निकल जाते हैं। थोड़ा और चलने पर वे वहाँ पहुँचते हैं, जहाँ से उन्हें लकड़ियाँ इकट्ठी करनी होती हैं। लकड़ियाँ लगभग छह महीने पहले काटी गई थीं। तब से वे यहीं पड़ी सूख रही हैं।



पर पहले वे जंगल में
उगे कुकुरमुत्ते इकट्ठा
करते हैं।



फिसलन भरे रास्तों पर भारी
लकड़ी उठाकर चलना बहुत
थकाने वाला काम है। फिर
भी देरी और दोगांग खुश हैं,
क्योंकि उनके साथ उनके
दोस्त हैं।

अचानक उनके एक
दोस्त को एक सुन्दर
दूधराज दिखाई देता
है। लेकिन देरी के
देखने से पहले ही वो
उड़ जाता है।





घर लौटते समय देरी और दोयांग चाँद को उगते हुए देखते हैं। अरुणाचल प्रदेश में सूरज जल्दी ढल जाता है। देरी इतनी थक जाती है कि रात का खाना भी नहीं खा पाती। वह सो जाती है और सपने में दूधराज को देखती है।





अन्तर ढूँढो
31-46

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में दस अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?

चित्र: नन्दनी कुमारी, तेरह साल, परिवर्तन सेंटर, ग्राम नरेन्द्रपुर, सिवान, बिहार



चैन की साँस

उमा सुधीर

एक महीने बाद जब मैं घर पहुँची तो मैंने चैन की साँस ली। तुम सोच रहे होंगे कि कई लोगों को अपने घर जैसा सुकून कहीं और नहीं मिलता। पर मैं सुकून की नहीं, साँस की ही बात कर रही हूँ, क्योंकि मैं दिल्ली होकर आई थी। हर साल की तरह इस साल भी तुम्हें वहाँ के AQI (Air Quality Index) के बारे में सुनने को मिला होगा। वैसे अपने-अपने इलाके के AQI को लेकर भी काफी लोग चिन्तित हैं। तो चलो, पहले कुछ शहरों के AQI आँकड़े (किसी एक दिन के) देखते हैं:

साल के सबसे छोटे दिन यानी 21 दिसम्बर की सुबह स्थिति कुछ इस प्रकार थी:

| शहर | AQI |
|---------|-----|
| दिल्ली | 257 |
| चेन्नई | 179 |
| मुम्बई | 110 |
| कोलकाता | 173 |

लेकिन इन आँकड़ों का मतलब क्या है? आखिर AQI कितना होना चाहिए? इसे समझने के लिए बॉक्स 1 देखो।

बॉक्स 1. AQI स्तर और सेहत पर असर :

| AQI स्तर | प्रभाव |
|----------|--|
| 0-50 | अच्छा |
| 51-100 | मध्यम (स्वीकार्य) |
| 101-150 | बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं व रोगियों के लिए हानिकारक |
| 151-200 | सभी के लिए हानिकारक |
| 201-300 | गम्भीर रूप से हानिकारक |

AQI एक माप है, जो बताता है कि हवा कितनी साफ या प्रदूषित है और उसका हमारे स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ सकता है। वायु की गुणवत्ता ठोस कणों (जैसे धूल, परागकण, कालिख आदि के सूक्ष्म कण) और हानिकारक गैसों जैसे सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, ओजोन आदि की मौजूदगी से प्रभावित होती है। इसके मुख्य स्रोत हैं— वाहनों से निकलने वाला धुआँ, निर्माण-कार्यों से उठने वाली धूल, बायोमास का जलना (चाहे वह पराली हो या गाँवों में ईंधन के रूप में इस्तेमाल होने वाली सामग्री), उद्योगों से निकलने वाला धुआँ और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (non-renewable energy sources) से होने वाला बिजली उत्पादन।

हमने देखा कि 0-50 AQI वाली हवा हमारी सेहत के लिए अच्छी मानी जाती है और 200 से ऊपर AQI वाली हवा काफी नुकसानदायक हो सकती है। अब वापिस चलते हैं अपने चार मुख्य शहरों पर। ये चारों महानगर हैं और बड़े औद्योगिक केन्द्र भी। भीड़, वाहन, बड़ी संख्या में लोगों का आना-जाना, खाना पकाना, फोन चार्ज करना वगैरह – इन सब में ऊर्जा की काफी खपत होती है। ज़ाहिर है यहाँ ऊर्जा की माँग ज़्यादा ही होती होगी। पर इन महानगरों में से भी क्या दिल्ली के आँकड़े तुम्हें कुछ अलग-से नहीं लग रहे?

इसका कारण है दिल्ली की भौगोलिक स्थिति। चेन्नई, मुम्बई और कोलकाता या तो समुद्र तट पर स्थित हैं, या समुद्र के काफी करीब हैं। समुद्र के नज़दीक इलाकों में तेज़ हवा के होने से प्रदूषण फैल जाता है। दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में एक तो हवा कम चलती है। ऊपर से सर्दियों में ठण्ड के कारण धुआँ ऊपर भी नहीं उठ पाता। नतीजा यह होता है कि दिल्ली में न तो दिन में आसमान नीला दिखता है, और न ही रात को तारे। वहाँ रहने वालों के फेफड़ों और सिगरेट पीने वालों के फेफड़ों में शायद ही कोई अन्तर हो!

भीड़ से भरे शहर, उद्योग और अत्यधिक ऊर्जा की माँग ये सब आधुनिक दुनिया की उपज हैं। पर क्या इसका मतलब यह है कि चैन की साँस अब हमारे नसीब में नहीं रही?

इस पर चर्चा करने से पहले बीजिंग की सक्सेस स्टोरी देखते हैं। 2013 में वहाँ हालात बहुत खराब थे। शहर के एक तरफ उद्योग थे और दूसरी तरफ पहाड़। तेज़ी-से औद्योगिकीकरण होने के कारण बहुत धुआँ होता था और पहाड़ों की वजह से वह धुआँ शहर में ही फँसा रहता था। लोगों को नीला आसमान देखने को मिलता ही नहीं था। साल भर वह ग्रे रंग का और धुँधला ही नज़र आता था।

लेकिन वहाँ इस स्थिति को बदलने की राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई गई। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों

को अपनाने के लिए ठोस प्रयास किए गए। पर्यावरण सम्बन्धी नियम-कानून सख्ती से लागू किए गए। हालाँकि प्रदूषण से बनने वाली ओज़ोन का स्तर आज भी चिन्ता का विषय है, पर आसमान फिर से नीला हो गया है। यूरोप के कई देशों में प्रदूषण नियंत्रण के नियम सख्ती से लागू किए गए। इसलिए वहाँ के ज़्यादातर शहरों में हवा की गुणवत्ता काफी अच्छी है।

पर हम हिन्दुस्तानी लोग नियम-कानूनों को कहाँ भाव देते हैं? हमें पता है कि पटाखों से प्रदूषण होता है, फिर भी पल भर की खुशी के लिए हज़ारों-लाखों रुपए जला डालते हैं। नियम हो या कोर्ट का आदेश, हम अक्सर उससे बच निकलने का रास्ता ढूँढ लेते हैं।

चलो, नियम लागू करवाने को यदि सरकार पर छोड़ भी दें तो क्या हमारे पास भीड़ से दूर किसी पहाड़ या समुद्र तट की ओर पलायन करने के अलावा कोई और उपाय है? तुम्हें क्या लगता है?

मुझे लगता है छोटा ही सही, पर एक काम हम ज़रूर कर सकते हैं। वह है – ऊर्जा का सही उपयोग। उद्योगों, निर्माण-कार्यों या बायोमास जलाने के बारे में तो हम ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते। लेकिन वायु प्रदूषण का एक बड़ा हिस्सा बिजली उत्पादन से जुड़ा है, खासकर थर्मल पावर प्लांट्स से।

तो क्यों न हम यह सोचें कि कहाँ-कहाँ बिजली बचाई जा सकती है और उसी के अनुसार अपनी आदतों में थोड़ा-सा सुधार कर लें। ज़रा सोचकर बताना कि हम क्या-क्या कर सकते हैं।

हाँ, इतना तो तय है कि अपनी सुख-सुविधा को थोड़ा-सा कुर्बान करना पड़ेगा। तुम्हें लग सकता है कि ये तो बिग डील है, रती भर बिजली कम खर्च करने से क्या फर्क पड़ेगा?

पर यार, बूँद-बूँद से ही तो सागर बनता है :-)

मैं गुम नहीं होऊँगी

अमित कुमार

चित्र: कनक शशि अनिल

डियर डायरी,

समझ नहीं आ रहा कि कहाँ से शुरू करूँ। कुछ हफ्ते पहले मेरे हाथ पर एक छोटा-सा सफेद दाग दिखा। मैंने सोचा कि शायद बाहर खेलने से हुआ होगा। लेकिन ये अब फैल रहा है। मेरे हाथों, घुटनों, यहाँ तक कि चेहरे पर भी आ गया है। डॉक्टर ने कहा कि मुझे विटिलिगो है। मतलब मेरी त्वचा ऐसे ही बदलती रहेगी। लेकिन उन्होंने ये नहीं बताया कि जब मैं इसे रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकती, तो आखिर मैं करूँ क्या?

कल पीटी क्लास में अक्षिता ने मेरे घुटने की ओर इशारा कर पूछा, “तुम्हें ये क्या हो गया है?” मैं कुछ नहीं कह पाई। चुपचाप वहीं खड़ी रही, जैसे किसी ने मुझे जकड़ लिया हो। मेरा दिल इतनी जोर से धड़क रहा था कि मुझे लगा सबको सुनाई दे रहा होगा। मैं चिल्लाकर कहना चाहती थी, “मुझे कुछ नहीं हुआ!” पर नहीं कहा। मैं बस बाथरूम की ओर भाग निकली। खुद को एक स्टॉल में बन्द कर लिया, जब तक कि क्लास खत्म नहीं हो गई। मैं बहुत रोई, डायरी! ऐसा लगता है कि अब लोग मुझे अलग नजरों से



ती है कि मैं खूबसूरत हूँ। मम्मी
के मैं खूबसूरत हूँ। मम्मी कहती
खूबसूरत हूँ। मम्मी कहती है कि
सूरत हूँ। मम्मी कहती है कि मैं
मम्मी कहती है कि मैं खूबसूरत
कहती है कि मैं खूबसूरत हूँ।
ती है कि मैं खूबसूरत हूँ। मम्मी
के मैं खूबसूरत हूँ। मम्मी कहती
खूबसूरत हूँ। मम्मी कहती है कि
सूरत हूँ। मम्मी कहती है कि मैं
मम्मी कहती है कि मैं खूबसूरत
कहती है कि मैं खूबसूरत हूँ।
ती है कि मैं खूबसूरत हूँ। मम्मी
के मैं खूबसूरत हूँ। मम्मी कहती
खूबसूरत हूँ। मम्मी कहती है कि
सूरत हूँ। मम्मी कहती है कि मैं
मम्मी कहती है कि मैं खूबसूरत
कहती है कि मैं खूबसूरत हूँ।
ती है कि मैं खूबसूरत हूँ।

देख रहे हैं। काश वे समझ पाते कि मैं
अब भी वही पाखी हूँ।

ये सिर्फ स्कूल की बात नहीं है।
पिछले हफ्ते हम मेरे कजिन की बर्थ-डे
पार्टी में गए थे। बुआ ने मुझसे पूछा,
“क्या ये सीरियस बीमारी है? ठीक तो
हो जाएगी ना?” उन्होंने ये बात बुरी
नीयत से नहीं कही होगी। लेकिन लगा
जैसे किसी ने मेरे पेट में जोर से घूँसा
मारा हो। सबको क्यों लगता है कि मुझे
ठीक होने की जरूरत है? मैं टूटी हुई
नहीं हूँ। पर अब टूट रही हूँ। मैं पार्टी से
जल्दी भाग गई। मुझमें और सवालों व
घूरती हुई नजरों को झेलने की ताकत
नहीं थी।

अब तो मेरी पसन्दीदा चीजें भी छूटने
लगी हैं। सबसे ज्यादा मैं स्विमिंग क्लास
को मिस करती हूँ। गहराई में उतरकर
तैरना मुझे बहुत अच्छा लगता था।
तैरते हुए मैं खुद को फ्री फील करती
थी। लेकिन अब मैंने प्रैक्टिस पर जाना
बन्द कर दिया है। ये सोचकर मैं काँप
जाती हूँ कि जब मैं स्विमसूट पहनूँगी,
तो सब मेरे धब्बे देखेंगे। अगर लोगों ने
घूरा तो? अगर उन्होंने मेरी पीठ पीछे
बातें कीं तो? मैंने कोच से कह दिया है
कि मैं बीमार हूँ। लेकिन सच्चाई ये है
कि मैं अब दूसरों के सामने आने का
हौसला नहीं जुटा पा रही हूँ।

पेसा लगता है कि मैं गायब हो रही
हूँ। जैसे हर दिन मेरा एक हिस्सा धुँधला
होता जा रहा है। मैं आइने से झाँकती
लड़की को नहीं पहचानती। मैं लम्बे
कपड़े पहनने लगी हूँ। भारी गर्मी में
भी। दोस्तों के साथ बाहर जाने से भी
बचने लगी हूँ। मेरे दिमाग में बस यही
बात घूमती रहती है कि वे मुझे देखकर
क्या सोचेंगे, क्या कहेंगे। लोग मुझसे
बात तो करते हैं पर अब वे मुझे नहीं
देखते। बस इन धब्बों को देखते हैं।
कहीं मैं सबकी लाइफ से पूरी तरह गुम
न हो जाऊँ! खुद की भी।

मम्मी कहती हैं कि मैं खूबसूरत हूँ।
लेकिन उनकी आँखों में चिन्ता साफ
झलकती है। उन्होंने मेरे लिए कुछ
खास क्रीम्स खरीदी हैं। अब हम सुबह-
शाम उन्हें मलते हैं। शायद कुछ असर
हो। या नहीं भी। फिर भी मैं उन्हें
लगाती रहती हूँ। क्योंकि मैं नहीं चाहती
कि मम्मी मुझे लेकर और चिन्ता करें।

काश सब पहले जैसा हो पाता! काश
मैं बेफिक्र हो घूम सकती! काश सबकी
नजरें इन धब्बों से पार देख पातीं! काश
मैं डिफरेंट न होती!

ये सब मेरे साथ ही क्यों हो रहा है?

तुम्हारी पुरानी,
पाखी।





अखबार की टोकरी

रक्षिता सेनी

जुगाड़ :
पुराने अखबार, कैंची, झाड़ू की सींक,
फेविकोल या गोंद

बुनी
हुई
टोकरी



अखबार के एक पन्ने से लम्बाई में 8 बराबर माप की पट्टियाँ काटो।

हरेक पट्टी को तीन बार मोड़कर सिरे को चिपका लो। ऐसी कई सारी पट्टियाँ

बना लो।
पट्टियों को बारी-बारी ऊपर-नीचे करते हुए बुनो।

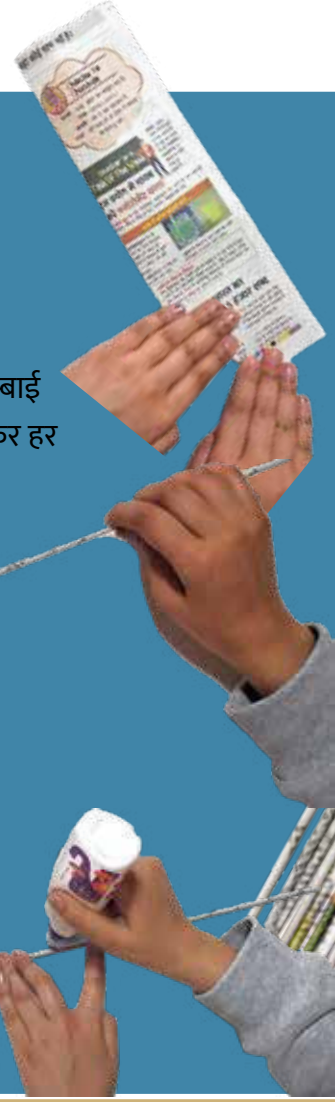
मनचाहे साइज़ तक बुनने के बाद पट्टियों को मोड़कर ऊपर उठाओ। फिर इन पट्टियों के बीच और पट्टियाँ बुनो।



कुण्डलीदार टोकरी

अखबार के एक पन्ने को लम्बाई में 8 बराबर पट्टियों में बाँटो। फिर हर पट्टी को आधा काट लो।

पट्टी को झाड़ू की सींक पर लपेटकर पतली स्ट्रॉ बनाओ। लपेटते समय सींक को धीरे-धीरे बाहर खिसकाते रहो। ऐसी कई स्ट्रॉ तैयार कर लो।





एक स्ट्रॉ को हल्का-सा दबाकर चपटा करो और कुण्डली बनाना शुरू करो। दूसरी स्ट्रॉ को पहली के अन्दर डालते हुए कुण्डली को बढ़ाओ। आगे भी इसी तरह स्ट्रॉ जोड़ते रहो। कुण्डली मज़बूत और कसी हुई होनी चाहिए। चाहो तो स्ट्रॉ जोड़ते समय गोंद लगा सकते हो।



मनचाहे साइज़ की कुण्डली बन जाने पर उसे बीच से धीरे-धीरे दबाओ और किनारों को ऊपर उठाकर टोकरी का आकार दो।

मज़बूती के लिए टोकरी पर फेविकोल

की पतली परत लगा सकते हो। फिर इसे चाहे जैसे सजा लो।



मनचाही ऊँचाई मिलने पर पट्टियों को लगभग 2 इंच छोड़कर काट लो। आमने-सामने के बीच वाली दो पट्टियों को वैसी ही रहने देना।



अब इनमें से एक ओर की पट्टी के सिरे को दूसरी में डालकर लूप बना लो। यही प्रक्रिया दूसरी ओर भी करो। इससे तुम्हारी टोकरी के हैंडल बनेंगे।

सभी सिरों को मोड़कर अच्छी तरह से चिपका लो। तुम्हारी टोकरी तैयार है!



भाग - 19

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और
हमारे देश में सफलता
से बसे हुए आक्रामक
पौधों की सीरिज की
अगली कड़ी...

आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

सफेद धतूरा (Thorn Apple)

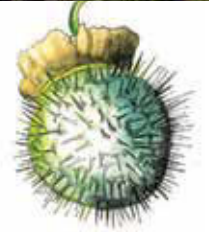
वैज्ञानिक नाम: *दतूरा इन्नोक्सिया*
/ *Datura innoxia*

मूल: उष्णकटिबन्धीय अमेरिका

कैसे पहुँचा: इसे अनजाने
में भारत में लाया गया।
सम्भव है कि ये खेती के
लिए बाहर से मँगाए गए
बीजों के साथ गलती से
आ गया हो।

यह एक औषधीय पौधा या झाड़ी है। एक साल में इसका पौधा खतम हो जाता है और फिर नया पौधा उगता है। यह पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित प्राकृतवासों (disturbed habitats) में उगता है। यह 0.3 से 1.5 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसका छतरीनुमा ऊपरी हिस्सा लगभग 2 मीटर तक फैल सकता है। इसके अण्डाकार पत्ते एक के बाद एक लगे होते हैं। ये ऊपर की ओर सँकरे और नीचे आधार पर कुछ चौड़े व हल्के कटे हुए होते हैं। इसमें अक्सर जुलाई से सितम्बर के बीच फूल और फल आते हैं।

इस धतूरे के फूल सफेद व नलीदार होते हैं। रात में इनसे हल्की खुशबू आती है। इसके फल गोलाकार या अण्डाकार होते हैं। ये 3 से 5 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। इनके ऊपर काँटे होते हैं। पकने पर ये हरे से भूरे रंग के हो जाते हैं। फिर ये फट जाते हैं और भूरे रंग के बीज बाहर निकल जाते हैं। ग्रे रंग के मुलायम रोंयों की वजह से पूरा पौधा ग्रे दिखता है।



असर

सफेद धतूरे का आसपास के पौधों पर एलीलोपैथिक असर होता है। यानी यह ऐसे रसायन उत्पन्न करता है जो आसपास उग रहे अन्य पौधों के विकास को धीमा कर देता है। इस तरह यह अकेले ही बड़े क्षेत्र में फैल जाता है और एक ही किस्म के पौधों का समूह बना लेता है। इससे स्थानीय जैव विविधता कम हो जाती है। इस पौधे के सभी हिस्से ज़हरीले होते हैं। यदि जानवर या इन्सान इसे खा लें तो उनकी जान भी जा सकती है। इसमें एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जिसकी वजह से इसका इस्तेमाल पारम्परिक दवाओं में किया जाता है। कुछ जगहों पर इसे सजावटी और धार्मिक महत्व वाले पौधे के तौर पर भी लगाया जाता है।



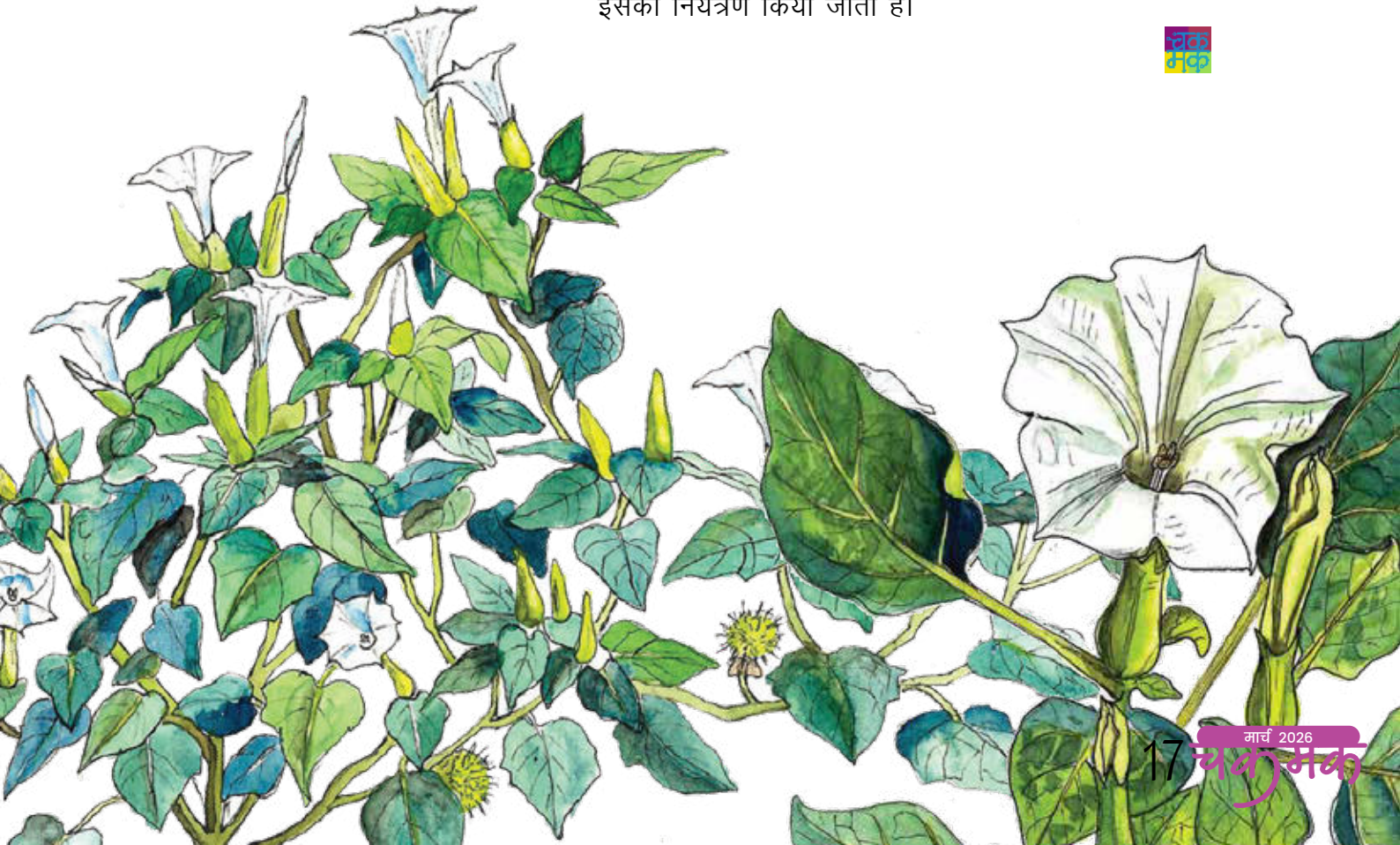
● प्रवेश

● स्वाभाविक

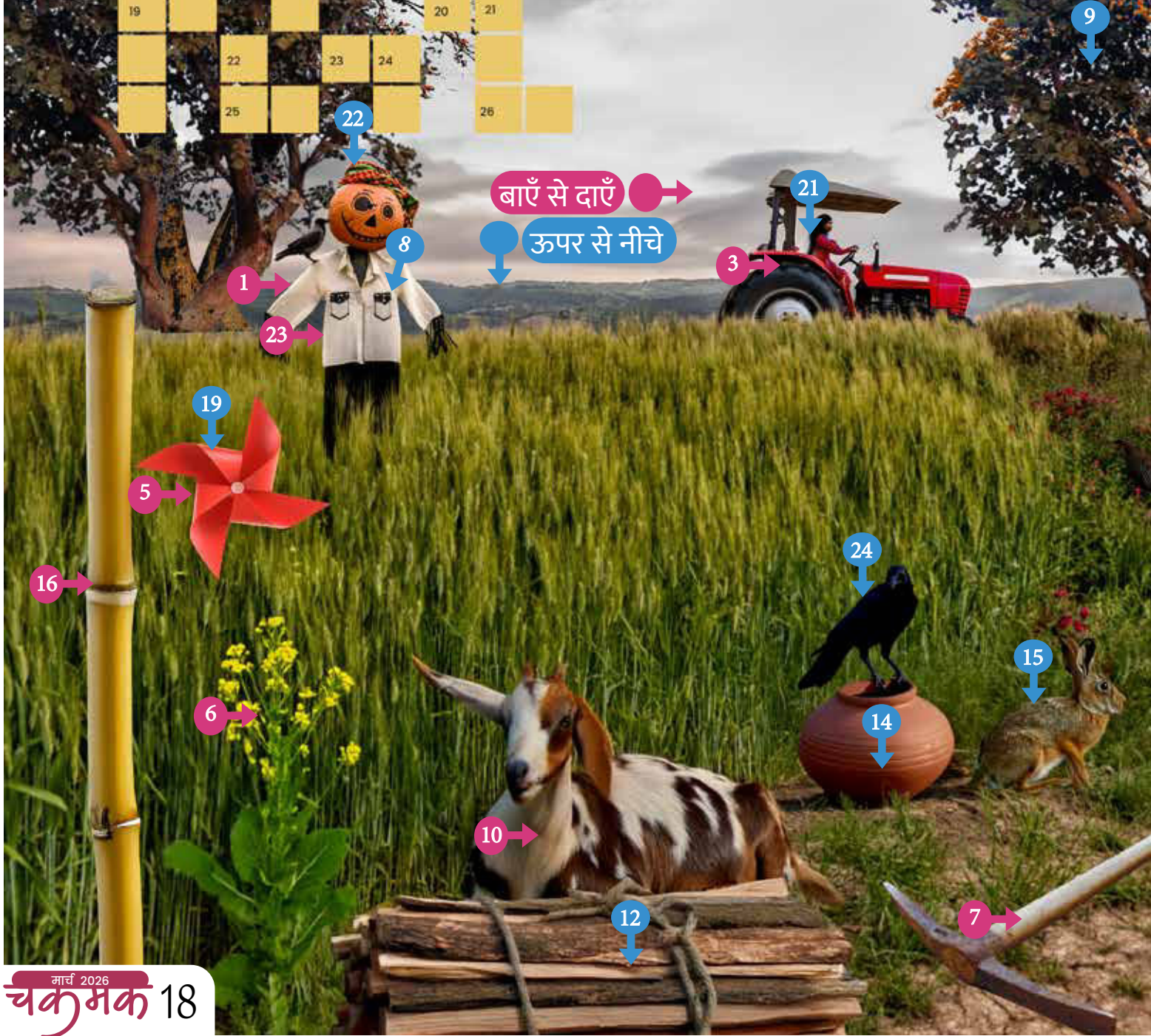
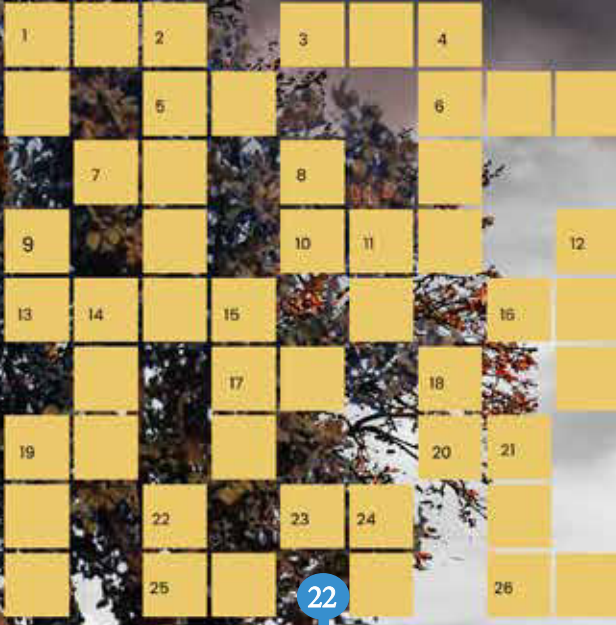
● मूल जगह दर्ज नहीं

बन्दोबस्त

भारत या दुनिया के अन्य हिस्सों में इसे हाथ या मशीन के ज़रिए स्थाई रूप से हटाने का कोई असरदार तरीका ज्ञात नहीं है। जहाँ ये पौधा फैल चुका हो वहाँ इसे नियंत्रित करने के लिए बार-बार हटाना पड़ता है। यदि किसी जगह नए पौधे उग रहे हों तो उन्हें बीज आने से पहले ही निकाल देना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया जैसे कुछ इलाकों में शाकनाशियों की मदद से इसका नियंत्रण किया जाता है।



चित्र पहेली



बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 9 | 4 | | 8 | | | | |
| | | 8 | | | | | 9 | |
| 6 | | | 2 | | 1 | 4 | | |
| 4 | 3 | | 1 | 2 | 8 | | 7 | 6 |
| 7 | | 6 | | 5 | 9 | 3 | 1 | |
| | 2 | | | | | | 4 | 5 |
| | 4 | | 9 | 1 | | | | |
| | | 2 | | 6 | | 7 | 3 | 9 |
| | | 9 | | 7 | | | 2 | |

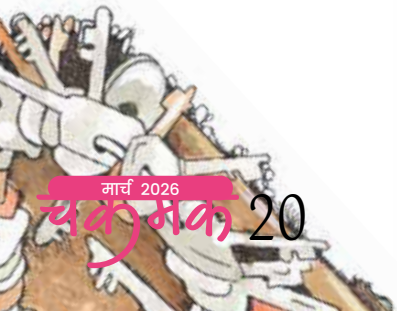


कविता डायरी

पापा सुधारनेवाला

राजेश जोशी

चित्र: प्रशान्त सोनी



मार्च 2026

चक्रमक 20

वह एक पुराने लेकिन मजबूत ताले की चाबी बनाने में लगा है
 एक चाबी को वह ताले में लगाकर घुमाता है
 फिर पास पड़े लकड़ी के कुन्डे पर रखकर
 रेतनी से चाबी को घिसता है
 कान के पास लाकर ताले में कुछ सुनता है
 जैसे ताले के किसी गुप्त रहस्य को सुनने की कोशिश कर रहा हो
 अब तो गिनती भी याद नहीं
 कि कितने बन्द तालों को खोल चुका है वह
 हम जो अक्सर अपनी चाबियाँ कहीं खो आते हैं
 हम नहीं जानते बन्द तालों को खोलने का हुनर
 घबराए हुए से भटकते हैं उसे खोजते हुए
 वह जैसे ही मिलता है एक राहत की साँस लेते हैं
 वह एक पतले से सरिए में बँधी चाबियों का गुच्छ उठाता है
 रेतनी और औज़ार लेकर चला आता है हमारे साथ
 और ताले के सामने आकर खड़ा हो जाता है
 कैसा भी अड़ियल ताला हो
 वह उसे खोल देता है



वह हमारे ताले की नई चाबियाँ भी देता है
 ऐसा कोई ताला नहीं जिससे उसने कभी हार मानी हो
 पूछना चाहता था मैं उससे एक बात
 कि तुम जीवन के उन अड़ियल तालों को खोलने का हुनर भी जानते हो
 जिनकी चाबियाँ टूँढने पर भी नहीं मिलती अक्सर?
 तुम जो किसी ताले को खोलने के बाद ठसक से मुस्कराते हो
 बरसों से बन्द पड़े जीवन के किसी ताले की
 चाबी बनाकर मुस्कराए हो कभी?
 तुमने कभी खोला है किसी अँधेरे का ताला?
 पता नहीं कैसे मन की बात भाँप जाता है वह
 चाबियाँ सौंपते हुए धीरे-से मुस्कराता है
 और चलते-चलते कहता है
 ताला कोई भी हो, ऐसा नहीं जो खोला न जा सके
 बस चाबी बिठाने का हुनर आना चाहिए।



कवि का बयान

राजेश जोशी



हमारे आसपास के कई लोग बहुत से छोटे-मोटे काम करते हैं। ऐसे काम जिन्हें हम साधारण कामों की श्रेणी में रखते हैं। हालाँकि उनके काम वक्त पड़ने पर किसी भी बड़े समझे जानेवाले काम से भी ज़्यादा ज़रूरी होते हैं। इस तरह का काम करनेवालों में कमाल का हुनर होता है। मज़े की बात यह है कि यह हुनर उन्होंने किसी स्कूल-कॉलेज से नहीं सीखा है। यह उन्होंने जीवन की ही पाठशाला में सीखा है— अपने पिता या माँ या चाचा या बड़े भाई से या किसी उस्ताद से।

ताला सुधारने का हुनर यानी चाबी के खो जाने पर बन्द ताले को खोलने और उसकी दूसरी चाबी बनाने का काम एक बहुत दिलचस्प काम है। इसे एक हुनरमन्द आदमी ही कर सकता है। कभी उसे गौर से देखो। वह किस तरह एक बन्द ताले को खोलता है! एक चाबी को उसमें बिठाता है, घुमाता है और बार-बार ताले के पास कान लगाकर कुछ सुनता है। लगता है जैसे ताले की कोई बात सुन रहा हो। तय है कि ताले के भीतर जो लीवर हैं उनमें चाबी के दाँत कहाँ टकरा रहे हैं, कहाँ अटक रहे हैं वह इसे सुनता है। उसके काम करने का ढंग मुझे बहुत आकर्षक लगता है। पंचर बनानेवाले, प्लम्बर, बिजली सुधारनेवाले जैसे कई हुनरमन्द लोग होते हैं।

अगर हम सोचें तो जीवन में ऐसे कितने ताले हैं, यानी कितनी रुकावटें हैं जिन्हें पार करने, हल करने का हुनर हम नहीं जानते। हमें हर जगह एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत होती है जो इन समस्याओं से बाहर आने का रास्ता बता सके। धीरे-धीरे हम खुद ही उन समस्याओं से, रुकावटों से बाहर आने का रास्ता खोजना सीख जाते हैं। हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे अनेक व्यवधान, अनेक रुकावटें होती हैं। ये ऐसे ताले हैं जिनकी चाबी बनाने और बैठाने का हुनर हमें सीखना होता है। कहा जा सकता है कि हर आदमी कहीं न कहीं ताला सुधारनेवाला होता है।

कविता का अन्तिम वाक्य यही कहता है कि ताला कोई भी हो ऐसा नहीं होता कि खोला न जा सके, बस चाबी बैठाने का हुनर आना चाहिए।



टिप्पणी

नरेश सक्सेना

राजेश जोशी अक्सर सरल और तथ्यात्मक वाक्यों से गहरी बातें कहते हैं। तथ्यात्मक वाक्य यानी दृश्यों और घटनाओं को उसी तरह लिख देना जैसी वे दिखाई दे रही हों। उनकी कलाकारी यह है कि घटना के साधारण विवरण के समान्तर उस बात के दूसरे अर्थ भी ध्वनित होने लगते हैं। और जब किसी पंक्ति के एक से अनेक अर्थ अलग-अलग स्तरों पर चलने लगें तो वह पंक्ति, काव्य पंक्ति बन जाती है।

“ताला-चाबी”, “चाबी का खोना” और “ताले की नई चाबी बनाने की क्रियाएँ” यह सभी शब्द यथार्थ भी हैं और प्रतीक भी। यह मुहावरा तो सुना ही होगा “तुम्हारे मुँह पर ताला क्यों पड़ा है?”। कितने ही रहस्यों पर आज तक ताले पड़े हुए हैं। आकाश पर पड़े तालों को वैज्ञानिकों ने खोला और नील आर्मस्ट्रॉन्ग ने चाँद पर पहला कदम रखा।

हमारी हर समस्या एक ताला है। ताले की चाबी खो जाए तो ताला खुद समस्या बन जाता है। फिर हम ताला सुधारनेवाले या उसकी चाबी बनानेवाले के पास जाते हैं। कविता के पहले पद में ताला सुधारनेवाला एक नई चाबी बनाने की कोशिश में है। हर ताले में कुछ घूमनेवाले लीवर होते हैं और सुधारनेवाला कान के पास ताला लाकर चाबी घुमाता है और यह समझने की कोशिश करता है कि चाबी कहाँ टकरा रही है। ऊपर या नीचे। ताले के भीतर झाँककर तो वह देख नहीं सकता। इसलिए वह कानों से देखता है। इस तरह वह अपनी ऐन्द्रिक क्षमता का विस्तार करता है।

अगले पदों में कवि— हम जो अक्सर अपनी चाबियाँ कहीं खो आते हैं और ऐसा कोई ताला नहीं जिससे उसने कभी हार मानी हो—जैसी पंक्तियों से हमें प्रेरित भी करता है और आगाह भी कि हम

अपनी बनी बनाई चाबियाँ न खोएँ यानी लापरवाह होने की बजाय सजग और चौकन्ने रहें। साथ ही यह भी कहता है कि चाबी खो भी जाए यानी हम किसी समस्या में फँस भी जाएँ तो चुनौती का सामना करें, क्योंकि ऐसा कोई ताला नहीं जो खुल न सके यानी ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका हल न हो।

ध्यान से पढ़ने पर इस कविता में हमें कवि की ऐसी एक-दो पंक्तियाँ भी मिलती हैं जो कवि की अपनी हैं, यानी घटना का विवरण नहीं है। इन्हीं पंक्तियों से कवि हमें गहरे अर्थों की ओर ले जाता है।

जैसे कवि का यह प्रश्न कि तुमने कभी खोला है— किसी अँधेरे का ताला?

अँधेरा एक धोखा है। अँधेरा अपने आप में कुछ नहीं होता। वह कोई पदार्थ या ऊर्जा नहीं है। वह रोशनी की अनुपस्थिति से पैदा होता है। अँधेरे से डरना नहीं चाहिए बल्कि रोशनी का उपाय करना चाहिए। इस तरह यह अँधेरे में रोशनी की तलाश की कविता हो जाती है।

अन्तिम पंक्ति है कि ताला कोई भी हो। ऐसा नहीं जो खोला न जा सके बस चाबी बिठाने का हुनर आना चाहिए।

जीवन में जगह-जगह हमें ताले पड़े मिलेंगे, समस्याएँ आएँगी, लेकिन ध्यान रहे कि यह कविता चाबी बिठाने के हुनर की बात करती है। ताला तोड़ने की बात नहीं। चाबी बैठाने का यह हुनर जीवन जीने का हुनर है।



किताबें

कुछ

कहती

हैं...

नीलोफर की मुस्कान

लेखक: अकरम गासेमपार
चित्रकार: नसीम आज़ादी
प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

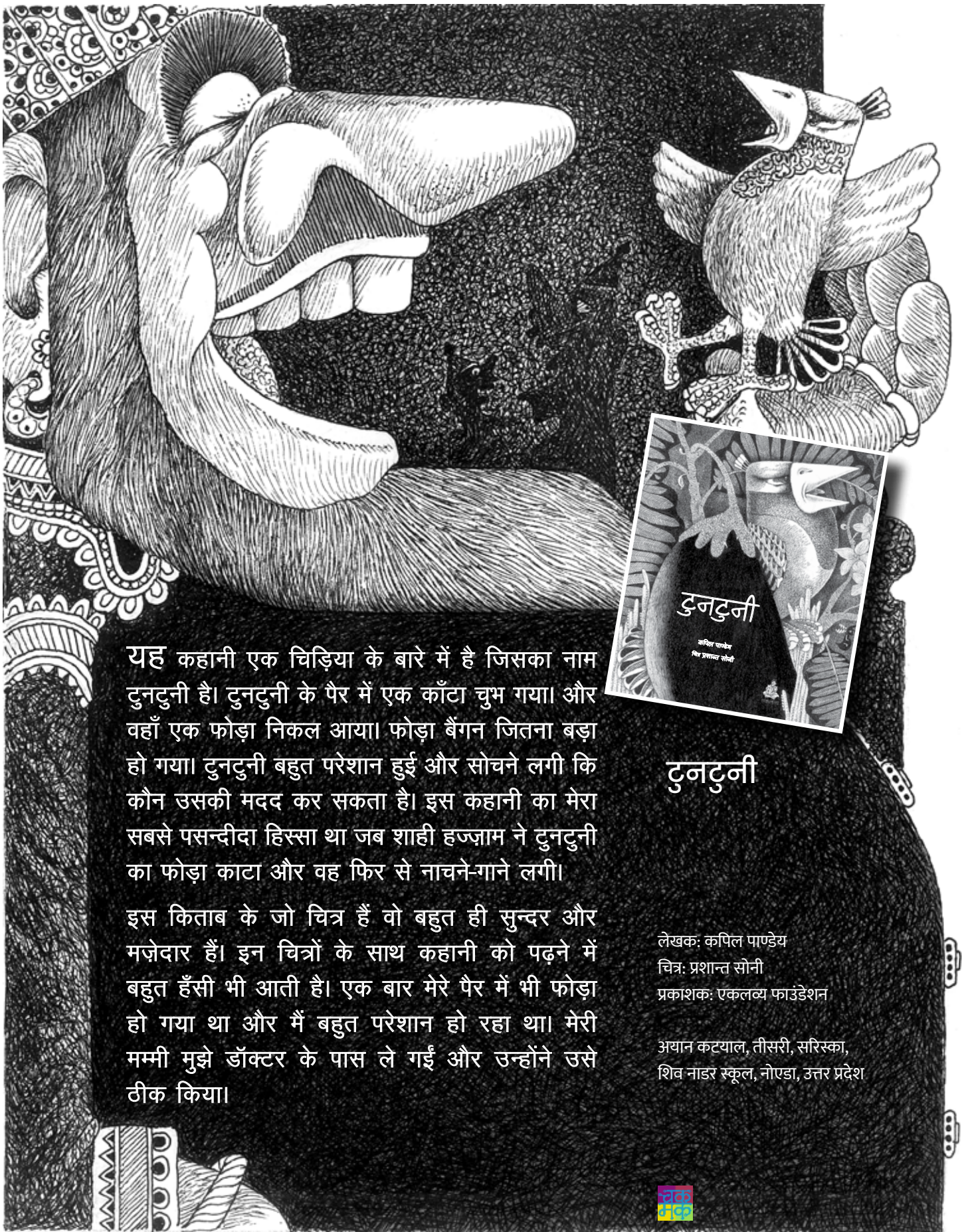
द्युति, चौथी, फातिमा स्कूल,
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



अकरम गासेमपार
चित्रांकन: नसीम आज़ादी

मैंने एक किताब पढ़ी— नीलोफर की मुस्कान। यह मेरी सबसे पसन्दीदा कहानियों में से एक है। इस कहानी को अकरम गासेमपार ने लिखा है। और इस किताब के शानदार चित्रों को नसीम आज़ादी ने बनाया है। इस किताब का नाम पढ़कर मुझे लगा कि मुस्कान के साथ क्या हुआ। मैंने इस किताब को पढ़ने के बाद जाना कि किसी की मुस्कान भी खोती है। मुझे जब अपना कोई सामान नहीं मिलता है तो मैं भी सोचती हूँ कि क्या करूँ। मैं जब अपनी मम्मी से कहती हूँ कि मुझे मेरा सामान नहीं मिल रहा है तो वो कहती हैं, “अच्छी तरह याद करो तुमने आखिरी बार कहाँ रखा था।” मैंने पहली बार देखा और सुना है कि आसमान की भी मुस्कान होती है। मुझे ये समझ नहीं आ रहा है कि उसने सबके माथे पर लकीरें खींची ही क्यों थीं। मुझे ये लगता है कि उसकी मुस्कान उसके चित्रों ने ली थी। मुझे चित्र बनाना बहुत पसन्द है। मैं जब भी चित्र बनाती हूँ तो मुझे नीलोफर की याद आती है।





यह कहानी एक चिड़िया के बारे में है जिसका नाम टुनटुनी है। टुनटुनी के पैर में एक काँटा चुभ गया। और वहाँ एक फोड़ा निकल आया। फोड़ा बैंगन जितना बड़ा हो गया। टुनटुनी बहुत परेशान हुई और सोचने लगी कि कौन उसकी मदद कर सकता है। इस कहानी का मेरा सबसे पसन्दीदा हिस्सा था जब शाही हज्जाम ने टुनटुनी का फोड़ा काटा और वह फिर से नाचने-गाने लगी।

इस किताब के जो चित्र हैं वो बहुत ही सुन्दर और मजेदार हैं। इन चित्रों के साथ कहानी को पढ़ने में बहुत हँसी भी आती है। एक बार मेरे पैर में भी फोड़ा हो गया था और मैं बहुत परेशान हो रहा था। मेरी मम्मी मुझे डॉक्टर के पास ले गईं और उन्होंने उसे ठीक किया।



टुनटुनी

लेखक: कपिल पाण्डेय

चित्र: प्रशान्त सोनी

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

अयान कटयाल, तीसरी, सरिस्का,
शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



उल्लू नहीं, ये तो पतंगा है!

पीयूष सेकसरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन

हम काई से ढके पत्थरों के बीच सँभल-सँभलकर ढलान उतर रहे थे। चारों ओर ऊँचे, टेढ़े-मेढ़े तनों वाले विशाल पेड़ खड़े थे। सुबह से बारिश हो रही थी। लेकिन ऊपर फैली पेड़ों की छतरी अलग-सी ध्वनियों के साथ अपनी ही बारिश रच रही थी। जंगल में गूँजती पक्षियों की आवाज़ें माहौल में और भी जादू घोल रही थीं। हम पुणे ज़िले में भामा नदी की घाटी में बसे वांद्रे गाँव के पास के एक छोटे से देववन¹ में थे। यह पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला की चोटी के पास का इलाका है। इसे सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला के नाम से भी जाना जाता है।

ऐसा लग रहा था मानो समय थम-सा गया हो। कुछ देर के लिए हम ठिठक गए और पूरे दृश्य को निहारते रहे। नीचे की ओर हमें खुली जगह में एक वन-देवता दिखाई दिया। उसके चारों ओर काई जमे पत्थरों का घेरा था, जो मुश्किल से दिख रहा था। यह देखकर हमें अच्छा लगा कि वन-देवता खुले में था, पेड़ों की छतरी के नीचे। उसे किसी कंक्रीट के डिब्बे में बन्द नहीं किया गया था, जैसा कि आजकल कई देववनों में होने लगा है।

फोटो: विवेक काले

1. देववन वे प्राकृतिक जंगल होते हैं, जिन्हें स्थानीय समुदाय अपनी धार्मिक आस्था के कारण सुरक्षित रखते हैं।





फोटो: अनिल के वर्मा

मिट्टी मुलायम थी और ह्यूमस से भरपूर भी। उस पर सड़े-गले पत्तों की कई परतें जमा थीं। तभी एक बड़े से गूलर के तने से कुछ उड़ा और उतनी ही तेज़ी से दूसरे पेड़ के पीछे गायब हो गया। उसके आकार, फुर्तीली उड़ान और उड़ने के ढंग से वह किसी पक्षी जैसा लगा। मैंने अपने दोस्त विवेक का ध्यान उस ओर दिलाया।

पत्थरों के बीच रास्ता बनाते हुए हम उस जगह के पास पहुँचे जहाँ हमें लगा कि वह उतरा होगा। उसे ढूँढने में हमें ज़्यादा देर नहीं लगी। वह पंख फैलाए गीली, काली छाल से चिपका हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वह बड़ी-बड़ी आँखों से हमें देख रहा हो। मैंने फटाफट उसकी एक फोटो खींच ली। उसने तेज़ उड़ान भरी और पास के पेड़ पर जा बैठा। फिर वह दोबारा उड़ा और लगभग अपनी पुरानी जगह पर लौट आया। लगता था वही गूलर उसका इलाका है।

दिलचस्प बात यह थी कि जब वो पंख फैलाकर पेड़ के तने से चिपक जाता तो पूरी तरह छिपा हुआ लगता। लेकिन उसके पंखों पर बनी बड़ी-बड़ी आँखों जैसी आकृतियों के कारण हम उसे आसानी से देख पा रहे थे। तभी हमें समझ आया कि हम जिसे देख रहे थे वह सामान्य उल्लू पतंगा (common owl moth) था!





फोटो: अभिजीत जुवेकर

हम चकित से उसे देखते रहे। वह बहुत बड़ा था— दोनों पंखों के सिरे मिलाकर लगभग 15 सेंटीमीटर (छह इंच)। उसके पंखों पर बनी विशाल उल्लू की आँखों जैसी आकृतियाँ मानो हमें उससे दूर रहने की चेतावनी दे रही थीं।

उल्लू पतंगा बहुत रोचक जीव है। वह काफी शर्मीला होता है। उसका पूरा रंग-रूप ऐसा होता है कि वह जिस पेड़ पर बैठता है उसमें घुल-मिल जाता है। लेकिन पंखों पर बनी आँखों जैसी आकृतियाँ शिकारी को डराने और भ्रमित करने का काम करती हैं। उल्लू की आँखों जैसी इस आकृति के कारण वह जंगल के कुशल शिकारी उल्लू जैसा दिखता है, जबकि असल में वह अपनी सूँड (प्रोबोसिस) से सड़े-गले फलों का रस पीता है।

उसके पंखों पर बनी ये आँखें मिमिक्री का बेहतरीन उदाहरण हैं। इन आँखों के बीच में सफेद धब्बा होता है, जो रोशनी पड़ने पर असली चमकती आँख जैसा लगता है। इतना ही नहीं, रात में पंख फैलाकर बैठने पर वह पूरा का पूरा उल्लू के चेहरे जैसा दिखता है। सोचो कि रात में सक्रिय रहने वाले किसी पक्षी जैसे कि नाइटजार का

उड़ते हुए इससे अचानक सामना हो जाए तो उसे लगेगा कि सामने उल्लू ही है। ऐसे में वह कितना डर जाएगा।

कॉमन उल्लू पतंगा कई जगहों पर मिल जाता है और अक्सर दिखाई भी दे जाता है। यह देखने में बेहद आकर्षक होता है। लेकिन इस पर ज़्यादा अध्ययन नहीं हुआ है। इसकी कई तस्वीरें मिलती हैं। पर मुझे इसके लार्वा की कोई तस्वीर नहीं मिली। इतने अनोखे जीव के बारे में इतनी कम जानकारी होना हैरानी की बात है।

यह रात में सक्रिय रहता है। इसके मुख्य शिकारी नाइटजार और चमगादड़ हैं। इसकी उल्लू जैसी मिमिक्री उन पक्षियों को डराने में मदद करती होगी जिनके शिकार का तरीका देखने पर निर्भर होता है। लेकिन यह चमगादड़ों से कैसे बचता होगा? वे तो उड़ते हुए आवाज़ें निकालते हैं और लौटकर आने वाली आवाज़ों के आधार पर शिकार का पता लगाते हैं।

मैंने पतंगा विशेषज्ञ प्रिथा डे से बात की। उन्होंने बताया कि उल्लू पतंगों को चमगादड़ उनके बड़े आकार के कारण खाते हैं। इससे उन्हें ज़्यादा

ऊर्जा मिलती है यानी कम मेहनत में ज़्यादा भोजन। लेकिन उल्लू पतंगों समूह के कुछ अन्य पतंगों ने आवाज़ के ज़रिए शिकार का पता लगाने वालों से निपटने का तंत्र विकसित किया है। इनके डराने वाले निशान मुख्यतः उन जीवों के लिए होते हैं जो देखने के आधार पर शिकार करते हैं, जैसे पक्षी और छिपकलियाँ।

अन्त में वह उल्लू पतंगा अपने प्रिय पेड़ के तने की एक छोटी दरार में जा बैठा। उस छोटे से देववन में रोशनी कम थी। इसलिए हमने छोटे टॉर्च से उस पर रोशनी डालकर उसकी कुछ तस्वीरें लीं और लौट आए। उम्मीद है हमने उसे ज़्यादा परेशान नहीं किया।

उस पुराने देववन में उन बड़ी-बड़ी उल्लू जैसी आँखों को देखना एक अनूठा अनुभव था। ऐसा लग रहा था जैसे हम पुराने समय में पहुँच गए हों।

उल्लू पतंगे की इस तस्वीर को आगे बढ़ाते हुए पूरा उल्लू बनाओ। अपने बनाए चित्र हमें ज़रूर भेजना।





क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था: ज्ञान/सीखने को जाँचने के एकमात्र तरीका आम तौर पर परीक्षा को माना जाता है। यह सही है या गलत? तुम इस बारे में क्या सोचते हो, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

कुछ लोग शारीरिक रूप से अलग दिखते हैं या उनका जीवन जीने का तरीका अलग होता है। तुम उन्हें किस तरह देखते हो? तुम्हारे ऐसा सोचने का कारण क्या है?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें

merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर वॉट्सएप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

आम तौर पर बच्चों का दिमाग जाँचने के लिए लिखित परीक्षा ली जाती है। इन परीक्षाओं में ज्यादातर बच्चे किताबों की भाषा में उत्तर देते हैं। कुछ बच्चे अपनी भाषा में उत्तर देते हैं। लिखित परीक्षा के अलावा मौखिक परीक्षा भी ले सकते हैं। इससे बच्चे अपनी भाषा में और अच्छे से समझा सकते हैं और बोल सकते हैं। हम प्रश्न को शेर या कविता के द्वारा भी पूछ सकते हैं। इससे बच्चे पहले तो उसमें उलझेंगे। फिर सुलझकर सरलता से अपनी भाषा में उत्तर देंगे और इससे बच्चों का दिमाग और भी ज्यादा विकसित होगा। कुछ ऐक्टिविटी करवाकर भी बच्चों की परीक्षा ली जा सकती है। इससे बच्चे चीजों को और बातों को समझकर सरलता से जबाब दे सकते हैं।

उदिता कुमारी, ग्यारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, दरभंगा, बिहार

मुझे लगता है कि ज्ञान अगर जाँचना है तो परीक्षा लेनी चाहिए। पर दूसरे नज़रिए से देखें तो लगता है कि परीक्षा की कोई ज़रूरत नहीं। परीक्षा की वजह से हम पढ़ाई करते हैं। इससे हमारा उस विषय का थोड़ा अभ्यास होता है। पर कुछ दिनों के बाद हम की हुई पढ़ाई को भूल जाते हैं। हमें कुछ याद नहीं रहता। असल ज़िन्दगी में हमें जिसका उपयोग होता है, वह हम परीक्षा ना देकर, पढ़ाई ना करके भी समझ सकते हैं।

सेजल अहिले, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हमारे माता-पिता नम्बरों को ही देखते हैं, खूबियों को नहीं देखते। हम क्या-क्या सीखते हैं उसको भी देखना चाहिए। पुस्तकों से तो हम सिर्फ रटते हैं कि पेपर में उत्तर देना है।

दीक्षा ककोड़िया, चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, डेंडुपुरा, शाहपुर, मध्य प्रदेश

क्यों क्यों

मुझे लगता है कि परीक्षा होना गलत है। परीक्षा की वजह से बच्चों को टेंशन हो जाता है। और अगर एक भी विषय में फेल हो जाएँ तो घरवाले बहुत डाँटते हैं। और फिर दोस्त सब भी चिढ़ाते हैं।

रिंकी दास, छठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, परसा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

क्या केवल परीक्षा ही सीखने की असली पहचान है
नहीं

अन्य तरीके



एक दिन मेरी कॉपी ने मुझसे कहा, “क्या मैं तभी भरती हूँ, जब परीक्षा आती है?” मैं मुस्कुराया और बोला, “नहीं। मैं तब भी सीखता हूँ जब पौधा लगाते समय मिट्टी से दोस्ती करता हूँ। जब प्रयोगशाला में रंग बदलते घोल को देखता हूँ, जब ढोलक की ताल पर उँगलियाँ चलती हैं, और जब चित्र में अपने सपनों को रंग देता हूँ।” परीक्षा मेरे ज्ञान को जाँचती है, लेकिन मेरी सोच, मेहनत और हुनर कहानियों, चित्रों, खेलों और प्रयोगों में भी झलकते हैं। इसलिए मैं मानती हूँ कि सीखने की किताब बहुत बड़ी है। परीक्षा उसका सिर्फ एक पन्ना है।

फिजा, सातवीं, विश्वास विद्यालय,
गुरुग्राम, हरयाणा

चित्र: वंशिका, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

परीक्षा केवल रटने की क्षमता जाँचता है, वास्तविक समझ, कौशल या रचनात्मकता नहीं। परीक्षा सिर्फ एक टूल है, सम्पूर्ण आकलन नहीं।

आजीवन सीखने की अनदेखी: सीखने की प्रक्रिया कक्षा और उम्र से परे हैं। यह निरन्तर चलती है। परीक्षा सिर्फ एक निश्चित समय की होती है। समझ, विश्लेषण, प्रयोग और रचना जैसी क्षमताएँ सिर्फ पेपर-पेन से नहीं पकड़ी जा सकतीं। प्रोजेक्ट, प्रस्तुति और चर्चा: इनके ज़रिए बच्चे की सोच, समस्या-समाधान कौशल और सहयोग क्षमता भी आँकी जा सकती हैं।

तनाव और दबाव: परीक्षा का भय कई बार योग्य बच्चे की क्षमता को भी कम कर देता है। कई बार स्टूडेंट्स सिर्फ रट लेते हैं, जबकि गहरी समझ नहीं बन पाती।

निरन्तर मूल्यांकन: क्लासवर्क, असेसमेंट, टास्क, पोर्टफोलियो आदि रोजमर्रा की सीख को बेहतर तरीके से करते हैं।

व्यावहारिक ज्ञान का अभाव: परीक्षा में 100% अंक लाने वाला व्यक्ति व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने में कमज़ोर हो सकता है।

आलिया एम के पठान, पाँचवीं, रमणा विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी, चंगलपेट, तमिलनाडु

मुझे लगता है ज्ञान को जाँचने के लिए मौखिक प्रश्न पूछे जा सकते हैं या खेल, एक्टिविटी के द्वारा बच्चों के ज्ञान को जाँच सकते हैं। देख सकते हैं कि उनमें सोचने की शक्ति कितनी है। जितना बच्चे खुद सोचेंगे उतना ही उनको ज्ञान प्राप्त होगा। हम बच्चों के बात करने के तरीके, उनके रहने के तरीके से भी आकलन कर सकते हैं। उनके व्यवहार से भी उसके ज्ञान को जाँच सकते हैं।

छाया साहू, शासकीय माध्यमिक शाला, कलारतराई, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

मेरे अनुसार यह उचित है क्योंकि यदि हमें ज्ञान अर्जित हो गया है या हम किसी चीज़ को सीख गए हैं तो हम परीक्षा में भी सफल हो जाएँगे। और यदि परीक्षा न हो तो हम स्वयं इस उलझन में रहेंगे कि हमने वो चीज़ सीखी है या नहीं। परीक्षा के द्वारा हमें यह समझ आता है कि किसी एक विषय को लेकर हमारी समझ कितनी विकसित हुई है।

धारणी देवांगन, नौवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरा विचार है कि ज्ञान के मूल्यांकन के कई अन्य तरीके भी हैं। केवल परीक्षा पर निर्भर रहना शिक्षा के व्यापक उद्देश्य को सीमित करता है। समाज अक्सर ज्ञान की तुलना में अंकों को अधिक महत्व देता है जिससे बच्चे केवल परीक्षा के लिए पढ़ते हैं, सीखने के लिए नहीं।

अकशा खान, सातवीं 'बी', अलिजियंस एकेडमी, कुक्षी, धार, मध्य प्रदेश

फटाफट बताओ

क्या है जो फ्रिज़ में रखने पर भी ठण्डा नहीं होता?

(आत्मसम्यग्)

क्या चीज़ है जो दादा कहने पर नहीं पापा कहने पर मिलती है?

(वर्ति)

यह दोनों पहेलियाँ मध्य प्रदेश के दमोह जिले के गैसाबाद ग्राम के शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की सातवीं कक्षा की छात्रा दर्शना राजके ने भेजी हैं।

क्या है जो महीने में केवल एक बार आती है और 24 घण्टे बाद चली भी जाती है?

(छात्रिका)

ऐसा कौन-सा सवाल है जिसका जवाब हर वक्त बदलता रहता है?

(ई ई आरु आरु इमर)

क्या है जो पैदा होते ही बिना परों के उड़ने लगता है?

(आरु)

क्या है जो दिन-रात चलने पर भी थकती नहीं?

(इर)

1. कौन-सी बोतल बाकी बोतलों से अलग है?



2. तुम्हारे सामने तीन बॉक्स हैं। तुम्हें पता है कि तीनों में से कम से कम एक बॉक्स में खज़ाना है। तीनों पर एक-एक चिप्पी लगी है और तीनों ही चिप्पियाँ गलत हैं।

पहला बॉक्स: दूसरे बॉक्स में खज़ाना है।

दूसरा बॉक्स: तीनों बॉक्स में खज़ाना है।

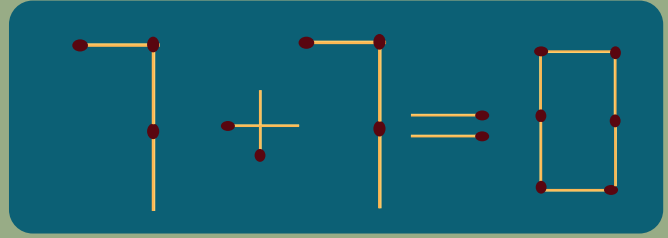
तीसरा बॉक्स: केवल एक बॉक्स में खज़ाना है।

क्या तुम बता सकते हो कि किस बॉक्स में खज़ाना है?

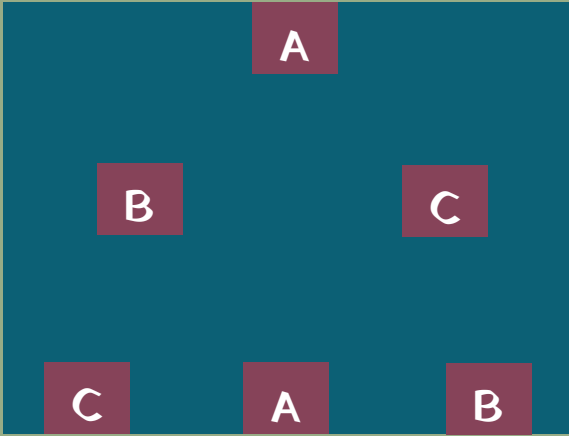
3. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग पिल्ला आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से पिल्ले आएँगे?



4. केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करो।



5. A को A से, B को B से और C को C से मिलाओ। लेकिन तुम्हारी लाइनें एक दूसरे को काट नहीं सकतीं और नीले बॉक्स के बाहर भी नहीं हो सकतीं।



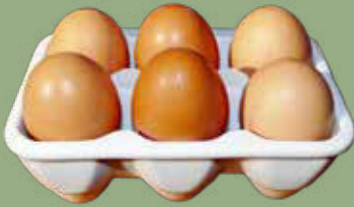
6. माही के पास 9 गेंदें हैं जो देखने में बिलकुल एक जैसी हैं। उनमें से 1 गेंद का वजन थोड़ा-सा ज़्यादा है। केवल दो बार तराजू का इस्तेमाल करके उसे पता करना है कि ज़्यादा वजन वाली गेंद कौन-सी है। क्या तुम ऐसा करने में उसकी मदद कर सकते हो?

7. रात के 1 बज रहे हैं। मूसलाधार बारिश हो रही है। क्या 72 घण्टे बाद धूप निकल सकती है?

8. दिए गए वाक्यों में कई फूलों के नाम छिपे हुए हैं। ज़रा ढूँढो तो।

- महक ने रसमलाई बहुत ही अच्छी बनाई थी।
- परात रानी खरीदने वाली है।
- बगुला बहुत देर से ताक लगाए खड़ा था।
- नैना से मलमल का दुपट्टा लेना है।
- सोहेल ने काजू ही काजू डाल रखे थे हलवे में।

9. सोहा के पास 6 अण्डे थे। दो उसने तोड़ लिए, दो फ्राई कर लिए और दो खा लिए। उसके पास कितने अण्डे बचे?



10. दी गई ग्रिड में मैकेनिक द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कई औज़ारों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

| | | | | | | | | |
|----|------|------|-----|------|------|-----|------|----|
| छै | दि | जा | रे | गो | ब | लो | द्रि | ल |
| नी | सा | मा | जै | न | टे | प | म | र |
| सू | पा | जी | क | साँ | ह | थौ | ड़ा | वा |
| बा | ना | ते | गु | के | जे | पु | से | का |
| तो | ग्रि | ल | न | ट | गो | पें | जी | ड़ |
| पं | प | कै | जी | म | रिं | च | ना | टो |
| से | चा | न | बो | न | द | क | ट | र |
| रै | ती | बे | ल्ट | वे | प्ला | स | लो | प |
| ल | जो | स्कू | मा | ग्रा | इं | ड | र | ब |

मुझे साइकिल चलाना आ गई

उमैर
चौथी, राजकीय
प्राथमिक विद्यालय
महराया, रुद्रपुर
उत्तराखण्ड

एक दिन मैंने सब बच्चों को साइकिल चलाते हुए देखा तो मेरा मन भी साइकिल चलाने का हुआ। मेरे कने साइकिल नहीं थी। फिर मैं घर गया और दादा की साइकिल देखी। मैंने दादा की साइकिल ली और चलाने लगा। एक बार तो मैंने साइकिल नाली में घुसा दी। फिर थोड़े दिनों बाद मैं नीचे रोड पर गया। वहाँ मैंने पानी पिया और साइकिल चलाना शुरू किया। पर इस बार मैंने साइकिल खेत में घुसा दी। फिर चलाते-चलाते मुझे लास्ट में साइकिल चलाना आ गई।

तब मैंने अम्मी-पापा से साइकिल लाने को कहा। पापा ने कहा, “ला दूँगा तू कक्षा 5 में आ जा। मैंने कहा, “ठीक है। पक्का ला दोगे?” पापा ने कहा, “ले आऊँगा।” बाबू बोले, “पहले थोड़ा बड़ा हो जा।” बहन बोली, “साइकिल लेकर गिर मत जाइएगा।” मैंने कहा, “जा यहाँ से।” फिर मैं बाबू की साइकिल चलाने लग गया। साइकिल लेकर जा रहा था तो तुझसे नाली का पटला टूट गया। मैंने पटले के बीच पत्थर रखा और साइकिल खड़ी कर दी।

मुझे साइकिल चलाना आ गई। अब बस कक्षा 5 में आ जाऊँ, फिर साइकिल आएगी।



चित्र: मानव जवारिया, आठवीं, स्कॉलर्स एकेडमी, देवास, मध्य प्रदेश

अच्छी साइकिल

दीपाशा
चौथी, वरिन्ना फाउंडेशन
करनाल, हरयाणा

चुन्नू पे एक साइकिल थी। वह बहुत छोटी थी। उसने सोचा कि मैं इसी को चलाकर देखता हूँ। उसने वह साइकिल चलाकर देखी। उससे वह साइकिल चल गई। उसने सोचा कि मैं इसको अपने दोस्तों को दिखाऊँ। फिर वह अपनी साइकिल लेकर दोस्तों के पास गया। उसके दोस्तों को साइकिल बहुत अच्छी लगी। उन्होंने एक-एक बार चलाई। चुन्नू को भी अब अपनी साइकिल अच्छी लगने लगी थी।



नाम - राधा कुमारी
गाँव - मिचा महान

चित्र: राधा कुमारी, चौथी, परिवर्तन सेंटर, ग्राम मियां भटकन, सिवान, बिहार

बेस्टी हो तो ऐसी

उज्जा
पाँचवीं
सावित्रीबाई फुले
फातिमा शेख
लाइब्रेरी, भोपाल
मध्य प्रदेश



चित्र: डॉली, तीसरी, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश

मेरी और ज़हनुमा की दोस्ती बहुत अच्छी थी। पर हम दोनों के बीच आई एक लड़की इन्दु। मुझे लगा कि उसने मेरी बेस्टी ज़हनुमा को हमेशा-हमेशा के लिए छिन लिया। मेरी बेस्टी ज़हनुमा बहुत अच्छी थी। फिर एक दिन मेरी लड़ाई हुई क्लास मॉनिटर से। मुझे तो ऐसा लग रहा था कि मेरी बेस्टी मुझसे असली में छिन गई है। पर दूसरे दिन ज़हनुमा की लड़ाई हुई मेरी मॉनिटर से, वो भी मेरी वजह से।

फिर मैंने ज़हनुमा से लंच में पूछा, “तूने मॉनिटर से लड़ाई क्यों की?” उसने कहा, “क्योंकि कल उसने तुझसे लड़ाई की थी।” मैंने कहा, “पर तू तो इन्दू की बेस्टी थी ना?” फिर उसने मुझे एक लपाड़ा मारा और बोला, “सोचना भी मत। और मैं कल नहीं आई थी ना, वरना हमारी लड़ाई कल ही होती।” मैं तो खुश हो गई कि मेरी बेस्टी मुझसे नहीं छिनी। आई लव यू ज़हनुमा।

लकड़ी की टेबल

ममता

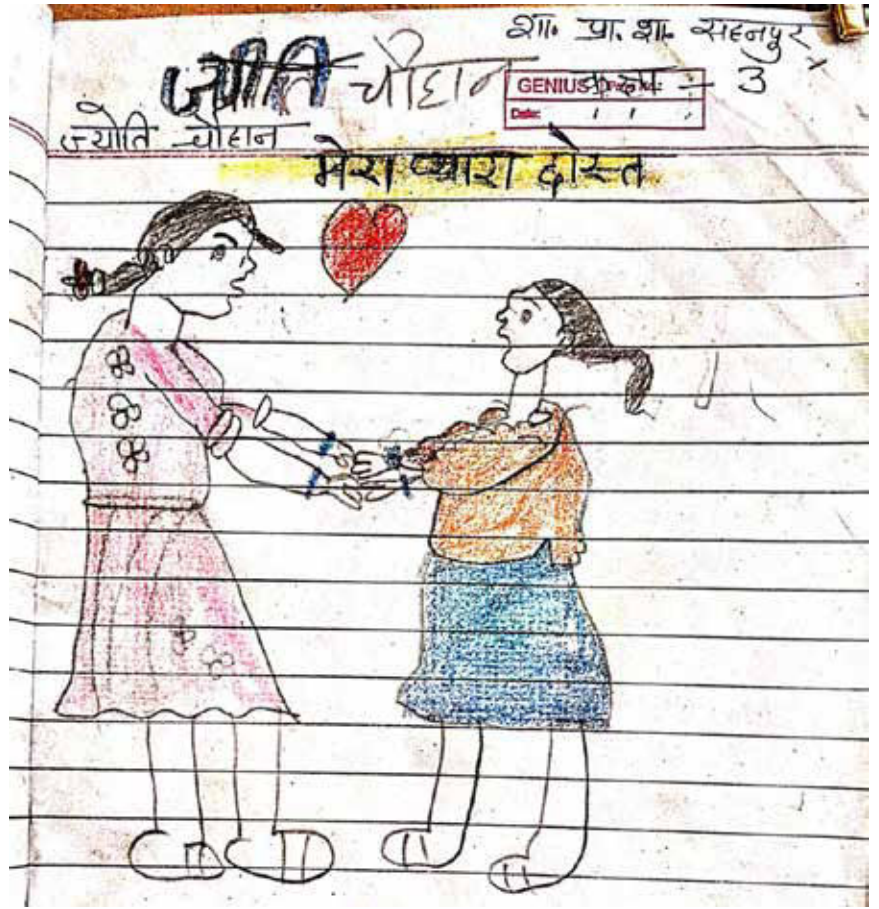
छठवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

मुझे हमेशा से ही एक टेबल चाहिए थी। पर हमेशा जब टेबल खरीदने की बात आती तो पापा कोई न कोई बहाना बना दिया करते। पर जब भाई की साइकिल की बात आई तो मम्मी की सहायता के चलते भाई की बात मान ली गई। हमेशा भाई की सहायता मम्मी करती हैं और कोई चीज़ लानी है या नहीं यह भी मम्मी पर निर्भर करता है।

परन्तु एक दिन मुझे अपनी किस्मत पर भरोसा न हुआ। मैं खुशी से फूली न समा रही थी क्योंकि मैं खुद टेबल लेने जा रही थी। हम घर से जल्दी ही रवाना हो गए। रास्ते में मैं अपनी किस्मत की तारीफ करने लगी। उस समय भले ही धरती तवे की तरह तप रही थी किन्तु मुझे कुछ महसूस न हुआ।

जब हम बाज़ार पहुँचे तो पहली दुकान पर सिर्फ लोहे की टेबल थीं। इसलिए हम दूसरी दुकान गए। वहाँ लकड़ी की टेबल तो थीं। पर मुझे जैसी चाहिए थी, वैसी नहीं थी। हम कई दुकानों पर गए और घर वापिस आ गए। पापा ने अपना विचार बदलते हुए कहा, “फिर कभी ले लेंगे।”

हम घर पहुँचे तो भाई ने कहा, “मैंने तो कहा था ना पर तू नहीं मानी।” अगले दिन जब मैं उठी तो कमरे में टेबल रखी थी। मैं बहुत खुश हुई। तभी कुछ ठण्डा-ठण्डा मेरे मुँह पर गिरा और मेरी नींद खुल गई। तब पता चला कि ये तो सपना था।



चित्र: ज्योति चौहान, तीसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, सहनपुर, छत्तीसगढ़

मेरे कुक पापा

दीपक बोहरा

दूसरी, विद्या विकास हाई स्कूल
बेंगलूरु, कर्नाटका

भैया ने बताया कि पेड़ भी खाना बनाते हैं। लेकिन वे अपना बनाया खाना नहीं खा पाते। मेरे पापा कुक हैं। वे भी दूसरों के घर टेस्टी खाना बनाते हैं। पर वे भी अपना बनाया खाना नहीं खा पाते। पेड़ पापा की तरह हैं।



अबीर, बग्गा और बाबा की कहानी

अबीर श्रीवास्तव
प्रेप सी, ब्लॉयज़
हाई स्कूल
इलाहाबाद
उत्तर प्रदेश

एक घर में तीन दोस्त रहते थे— अबीर, बग्गा और बाबा। वो लोग कहीं घूमने जा रहे थे। तभी उनको रास्ते में एक बिल्ली दिखाई दी। तीनों ने सोचा कि इसको भी अपने साथ ले चलते हैं। फिर तीनों अपनी सैर पर निकल गए। रास्ते में उनको एक बस दिखाई दी। उन्होंने सोचा कि इस बस से चलते हैं। वे अन्दर गए। उनको तीन खाली सीट मिलीं। वे उस पर बैठ गए। तीनों दोस्तों ने ड्राइवर से कहा कि उनका सामान ऊपर रख दे। ड्राइवर ने उनका सामान बस पर रख दिया।

जाते-जाते उनको भूख लगी। वे लोग ड्राइवर से बोले कि उनका पीले कलर का बैग उनको दे दें। ड्राइवर ने उनका पीले कलर का बैग निकाल दिया। वे लोग सैर करते-करते खाना खाने लगे। रास्ते में उनको एक जूस की दुकान दिख गई। वे लोग ड्राइवर से बोले, “यहाँ बस रोक दें।” ड्राइवर ने बस रोक दी और बोला, “आप लोग उतर सकते हैं।” वो लोग जूस की दुकान पर आराम से जूस पीने लगे।

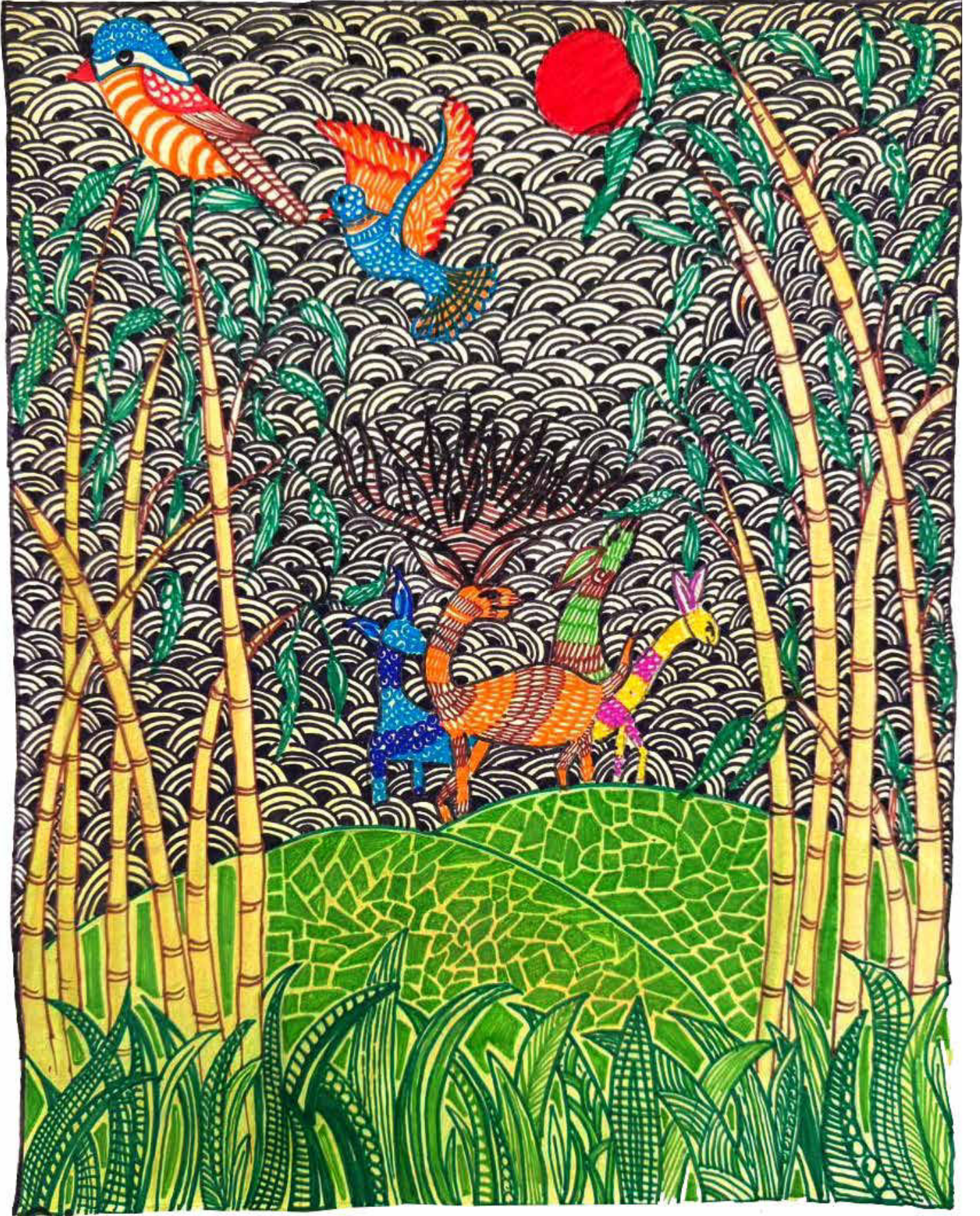
एक लड़के को टॉयलेट आई। वह टॉयलेट करने गया। वह जब हाथ धुल रहा था, तभी वेटर उसके पास आया और पूछा, “आप रात का खाना खाकर जाएँगे?” लड़के ने बोला, “नहीं।” वेटर बोला, “यहाँ पर फाइव स्टार होटल है।” लड़के ने बोला, “हम लोगों को बहुत काम है।” वेटर बोला, “ठीक है।” फिर वे लोग सफर पर निकल गए।

तभी उन्हें ध्यान आया कि उनके नीले बैग में उनकी बिल्ली है। वे लोग बस ड्राइवर

से हड़बड़ाकर बोले, “बस रोको।” ड्राइवर बोला, “आप लोग हड़बड़ा काहे रहे हैं? और आप लोग इतनी परेशानी में क्यों लग रहे हैं?”

उन तीनों दोस्तों ने बोला कि उनका नीला बैग निकाल दें। ड्राइवर को यह बात अजीब लगी। ड्राइवर ने उनका नीला बैग निकालकर दिया। वे लोग अपनी बिल्ली को भूखा देखकर बहुत दुखी हुए। उन लोगों ने ड्राइवर से बोला कि ‘पेटशॉप’ में चलें। ड्राइवर ‘पेटशॉप’ पर अपनी बस ले गया। वहाँ पर बिल्ली का खाना मिल रहा था। वे लोग दौड़ते-दौड़ते अपनी बिल्ली को खाना खिलाने ले गए। बिल्ली जब खाना खा ली, तो वे तीनों अपनी बिल्ली को तन्दुरुस्त देखकर बहुत खुश हुए। और फिर से अपने सैर पर निकल गए।

रात के 11:30 बज रहे थे। वे लोग बहुत थक गए थे और आराम करने लगे। तभी उन्हें महसूस हुआ कि उनकी बिल्ली किसी कार के नीचे दब गई। वे लोग बस से एक ऊँची छलाँग लगाकर दौड़ते-दौड़ते अपनी बिल्ली को जल्दी से ठीक कराने अस्पताल में ले गए। बिल्ली बहुत घायल थी। उन तीनों ने डॉक्टर से पूछा, “क्या हमारी बिल्ली ठीक हो जाएगी? डॉक्टर ने कहा, “इसको तीन दिन के लिए यहीं पर रहना पड़ेगा।” रात के दो बज चुके थे। वे लोग अपना दुखी मन लेकर उस बस में चढ़कर अपनी सैर पर निकल गए। लेकिन इससे उनकी पूरी ट्रिप बेकार हो गई।



चित्र: दिव्या वंजारे, सातवीं, ईएमआरएस, सहस्त्रकुंड, अमरावती, महाराष्ट्र (स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त)

जवाब

1. A वाली, क्योंकि उसकी कॉर्क का हिस्सा बॉटल के अन्दर नहीं दिख रहा है।

2. तीनों चिप्पियाँ गलत हैं। इसका मतलब है कि तीसरे बॉक्स की चिप्पी भी गलत है और इसलिए खजाना कम से कम दो बॉक्स में है। अब पहले बॉक्स की चिप्पी में लिखा है कि दूसरे बॉक्स में खजाना है। चूँकि चिप्पी गलत है यानी दूसरे बॉक्स में खजाना नहीं है। इसका मतलब है कि बॉक्स 1 व बॉक्स 3 में खजाना है।



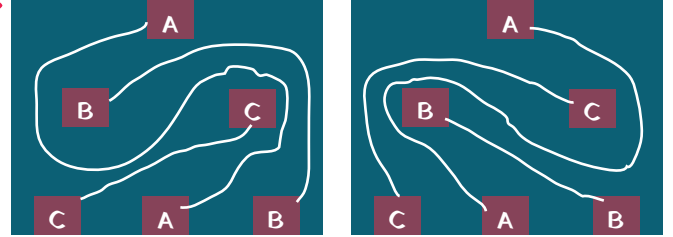
6. गेंदों को तीन-तीन के समूहों में बाँट लो। पहले हम भारी गेंद वाले समूह का पता करेंगे। इसके लिए किन्हीं भी दो समूहों को तराजू के दोनों पलड़ों पर रखकर वजन कर लो। यदि दोनों समूहों का वजन बराबर नहीं हुआ तो ज़्यादा वजन वाले समूह में से किन्हीं भी दो गेंदों का वजन करके देख लो। यदि दोनों समूहों का वजन बराबर हुआ तो तीसरे समूह में से किन्हीं भी दो गेंदों का वजन करके देख लो।

7. नहीं, क्योंकि रात के 1 बजे हैं तो 72 घण्टे बाद भी रात के 1 ही बज रहे होंगे। इसलिए धूप निकलने की कोई सम्भावना नहीं है।

8. 1. महक ने रसमलाई बहुत ही अच्छी बनाई थी।
2. परात रानी खरीदने वाली है।
3. बगुला बहुत देर से ताक लगाए खड़ा था।
4. नैना से मलमल का दुपट्टा लेना है।
5. सोहेल ने काजू ही काजू डाल रखे थे हलवे में।

9. 4 अण्डे बचे, क्योंकि जो 2 अण्डे उसने तोड़े थे, उन्हीं को फ्राइ करके खाया था।

5. इसके कई जवाब हो सकते हैं, दो जवाब यहाँ दिए गए हैं:



10.

| | | | | | | | | |
|----|------|------|-----|------|------|-----|------|----|
| छै | दि | जा | रे | गो | ब | लो | ड्रि | ल |
| नी | सा | मा | जै | न | टे | प | म | र |
| सू | पा | जी | क | साँ | ह | थौ | ड़ा | वा |
| बा | ना | ते | गु | के | जे | पु | से | का |
| तो | ग्रि | ल | न | ट | गो | पें | जी | ड़ |
| पं | प | कै | जी | म | रिं | च | ना | टो |
| से | चा | न | बो | न | द | क | ट | र |
| टै | ती | बे | ल्ट | वे | प्ला | स | लो | प |
| ल | जो | स्कू | मा | ग्रा | इं | ड | र | ब |

3.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

| | | | | | | | | | |
|------|-------|-------|------|-------|-------|-------|-------|------|--|
| 1 वि | जू | 2 का | | 3 दे | वट | 4 ट | | | |
| छू | | 5 ला | ल | | | 8 स | ट | लो | |
| | 7 गें | ती | | 8 जे | | भ | | | |
| 9 डा | | त | | 10 व | 11 क | टी | | 12 ग | |
| 13 क | 14 न | ट | 15 स | | हा | | 16 ल | ड | |
| | ट | | 17 ट | ल्टी | | 18 गो | | ट | |
| 19 च | का | | हा | | | 20 ट | 21 ल | | |
| क | | 22 ला | | 23 बी | 24 का | | ड | | |
| टी | | 25 फा | खरा | | ग | | 26 की | ला | |

सुडोकू-94 का जवाब

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 9 | 3 | 5 | 7 | 6 | 2 | 1 | 4 |
| 1 | 4 | 7 | 9 | 2 | 8 | 5 | 3 | 6 |
| 5 | 6 | 2 | 4 | 1 | 3 | 9 | 7 | 8 |
| 6 | 1 | 9 | 7 | 8 | 2 | 4 | 5 | 3 |
| 3 | 8 | 4 | 1 | 6 | 5 | 7 | 2 | 9 |
| 7 | 2 | 5 | 3 | 4 | 9 | 8 | 6 | 1 |
| 9 | 5 | 1 | 2 | 3 | 4 | 6 | 8 | 7 |
| 2 | 7 | 8 | 6 | 9 | 1 | 3 | 4 | 5 |
| 4 | 3 | 6 | 8 | 5 | 7 | 1 | 9 | 2 |

मच्छर से ली प्रेरणा

क्या तुमने कभी सोचा है कि एक मच्छर वैज्ञानिकों की मदद कर सकता है? ये वैज्ञानिक 3D प्रिंटिंग से रक्त वाहिकाओं जैसी पतली संरचनाएँ बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्हें बहुत महीन नोज़ल की ज़रूरत थी। पर बाज़ार में उपलब्ध नोज़ल या तो मोटी थीं या बहुत महँगी। ऐसे में वैज्ञानिकों की प्रेरणा बने मच्छर। उनकी सूँड (प्रोबोसिस) की बनावट से प्रेरणा लेकर वैज्ञानिकों ने बहुत महीन नोज़ल विकसित की। इसकी मदद से वे लगभग 20 माइक्रोमीटर तक पतली संरचनाएँ बना सके। यह तकनीक भविष्य में ऊतकों और अंगों के कृत्रिम ढाँचे बनाने में काम आ सकती है। साथ ही यह बायो-प्रिंटिंग, माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह दिखाता है कि प्रकृति अक्सर विज्ञान और तकनीक के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है।



भारत में बढ़ते गार्बेज कैफे

गार्बेज कैफे एक अनूठी पहल है। इसकी शुरुआत 2019 में छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर शहर से हुई। गार्बेज कैफे में लोग पैसे से नहीं, बल्कि प्लास्टिक कचरे से खाना खरीदते हैं। एक किलो प्लास्टिक के बदले उन्हें गरम खाना मिलता है, और आधा किलो देने पर नाश्ता। कैफे द्वारा जुटाया गया प्लास्टिक अलग-अलग केन्द्रों में छाँटा और रीसाइकल किया जाता है। इससे शहर में लैंडफिल में जाने वाला कचरा कम हुआ है और कई महिलाओं को रोज़गार भी मिला है। अब ऐसे कैफे देश के कई अन्य शहरों में भी देखने को मिल रहे हैं। हालाँकि यह प्लास्टिक समस्या का जड़ से समाधान नहीं है, फिर भी यह दिखाता है कि छोटी-सी स्थानीय कोशिश भी बड़ा बदलाव ला सकती है।





प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्वुप्रिट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन